लोग कहते हैं हमारे इंस्टिट्यूट वर्ल्ड के बेस्ट में नहीं, लेकिन स्टेनफोर्ड, कैलिफोर्निया, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के बाद आईआईटीयन्स ने शुरू किए हैं बिलियन डॉलर स्टार्टअप

परमाणु वैज्ञानिक डॉ. काकोड़कर ने रोल ऑफ आईआईटीज़ इन नेशन बिल्डिंग पर की बात

भास्कर संवाददाता | इंदौर

वर्ष 1700 तक भारत एग्रीकल्चर फील्ड में दुनिया में अव्वल था। जब इंडस्ट्रियल एरा आया तो हम पिछड़ गए। आज का समय इंडस्ट्रियल और नॉलेज एरा का ट्रांज़िशन टाइम है। हमें यहां केचअप करना होगा। हमारे एजुकेशन इंस्टिट्यूट्स के बारे में कहा जाता है कि वर्ल्ड के बेस्ट में हम कहीं नहीं आते लेकिन आपको जानकार आश्चर्य होगा कि स्टेनफोर्ड, हार्वर्ड और यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के बाद आईआईटी ही ऐसा संस्थान है जहां के स्टूडेंट्स द्वारा शुरू किए गए स्टार्टअप्स आज करोड़ों डॉलर्स का बिज़नेस कर रहे हैं। अमेरिका में बिलियन डॉलर्स स्टार्टअप शुरू करने वाले दूसरे देश के लोगों में भारत के लोगों की संख्या सबसे ज्यादा है। इसका ज़िक्र अमेरिकन पॉलिसी ब्रिफ में भी किया गया है।

आईआईटी इंदौर में अपने पब्लिक लेक्चर के दौरान ख्यात परमाणु वैज्ञानिक डॉ. अनिल काकोड़कर ने ये बातें कहीं। उन्होंने कहा कि भारत को ज्ञान के मामले में दुनिया का विश्वगुरू कहा जाता था। सुविधाओं से दूर जंगलों में चलने वाले आश्रमों में वो ज्ञान दिया जाता था जिसने हमें वो स्थान दिलवाया। आज के नॉलेज एरा में ये ज़िम्मेदारी आईआईटी जैसे संस्थानों पर है कि वे हमें खोया हुआ वैभव वापस लौटाएं। इसके लिए कुछ चीज़ों पर काम करना होगा। इनमें रिसर्च सबसे आगे है। हम इज़राइल, केनेडा, स्वीडन, यूके, स्विट्ज़रलैंड और फिनलैंड जैसे देशों के मुकाबले कई ज्यादा पैसा रिसर्च में इन्वेस्ट करते हैं लेकिन अब ज़रूरी ये है कि रिसर्च को प्रोडक्टिव बनाना होगा। हमें टेक्नोलॉजिकल प्रोडक्ट्स बनाने होंगे। टेक्नालॉजिकल प्रोडक्ट्स हमारी परकेपिटा जीडीपी सुधारने में भी मददगार होंगे क्योंकि टेक्नालॉजिकल एडवांसमेंट के बल पर ही दुनिया को डिक्टेट किया जा सकता है। वर्तमान में ऑटोमोबाइल, फार्मासिटीकल और टेक्सटाइल सेक्टर को छोड़ दें तो लगभग हर सेक्टर में हमारे इम्पोर्ट, एक्सपोर्ट से ज्यादा हैं।

तीन सालों में बनाए 100 डिवाइस, 40 पेटेंट्स और 6 स्टार्टअप

आईआईटी में छात्रों के समक्ष पब्लिक लेक्चर देते ख्यात परमाणु वैज्ञानिक डॉ. अनिल काकोड़कर।

आईआईटी बॉम्बे, सीओईपी पुणे और वीएनआईटी नागपुर ने मिलकर बायोमेडिकल इंजीनियरिंग, टेक्नालॉजी इन्क्यूबेशन सेंटर 2015 में शुरू किया। इस सेंटर ने 10 सेंटर बनाए हैं। 100 से ज्यादा रिसर्चर्स, फैकल्टीज़ और स्टूडेंट्स ने 400 से ज्यादा अनमेट क्लिनिकल नीड्स को पहचाना और 100 से ज्यादा डिवाइस बनाए। सेंटर के पास 40 से ज्यादा पेटेंट्स और 15 लाइसेंस प्रोडक्ट्स हैं। एक आईआईटी ये सब कर सकता है तो देश के बीस आईआईटी बहुत बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

आईआईटी मद्रास जहां बाउंड्रीवॉल नहीं है

आईआईटी मद्रास एक ऐसा इंस्टिट्यूट है जहां आपको कोई बाउंड्रीवॉल नहीं दिखेगी। शहर के बीच गुज़रते हुए इंस्टिट्यूट बिल्डिंग्स आ जाते हैं। साथ ही लगा हुआ इंडस्ट्रियल एरिया है और इन दोनों के बीच रिसर्च पार्क है। कंसेप्ट ये है कि एकेडमी, इंडस्ट्री और रिसर्च को आपस में जोड़ा जाए और उनके नॉलेज का उपयोग सोसायटी के लिए किया जाए। कुछ सालों पहले जब मैं आईआईटी की रिपोर्ट लिख रहा था उस वक्त चायना में ऐसे 300 हब थे। हमारे यहां सिर्फ एक है।

Dainik Bhaskar (Indore), 25.08.2018, Page-2